प्रबोध कुमार गोविल

खौफनाक गह्वर

ई-मेल-prabodhgovil@gmail.com

उसकी आँखों में चमक आ गयी।

उसने एक बार इधर-उधर देखा। संयोग से आसपास कोई भी नहीं था। दूर तक गली सुनसान पड़ी थी। उसने झुककर नीचे गिरा वह पर्स उठाया और जेब में रख लिया।

मुश्किल से दो कदम चला होगा कि उसने देखा, सामने वाले मकान का दरवाजा खुला। उसमें से एक आदमी तेजी से बाहर निकला। आदमी ने बाहर से पलटकर दोमंजिले पर खुली-खिड़की की ओर कोई इशारा किया। वहाँ से एक छाया हिलती हुई दिखाई दी। फिर तुरंत वह छाया खिड़की से हटी। थोड़ी ही देर में एक और आदमी नीचे उतर रहा था।

अब दूसरा आदमी भी बाहर आ गया था और वे दोनों तेज-तेज चलते उसकी ओर आ रहे थे।

वह ठिठक गया। एक आदमी काफी डरावना-सा था। दूसरा उतना नहीं, पर दूसरे ने जिस ढंग से सिगरेट निकाल कर जलायी, वह खालिस दादाओं वाला था।

वह डर गया। उसकी चाल धीमी हो गयी।

वे दोनों तेजी से आ रहे थे। किसी भी क्षण उसे पकड़ सकते थे।

उसका हाथ स्वचालित ढंग से जेब में चला गया। अब वह उन लोगों की नज़र बचाकर वह पर्स फेंक भी नहीं सकता था। वे काफी नजदीक थे।

आदमियों के चेहरे की भयावहता में किंचित् मात्र भी कमी नहीं आई थी। वे

उसी सख्त चाल से बढ़े चले आ रहे थे।

उसे पसीना आ गया। वह लगभग रुक ही गया। उसे गली के दूसरे छोर से भागना भी अब व्यर्थ लगा, क्योंकि वे मज़बूत किस्म के लोग थे। उसने जेब में पड़े अपने हाथ में ही पर्स ले लिया था। वह तैयार था किसी भी क्षण उसे निकालकर देने को। फिर भी, किसी आशंका से उसकी कनपटी फड़क रही थी।

आदमी एकदम पास आ गये।

वह पसीने से भीगा हुआ था। 'जबान तालू से अटक रही थी। फिर भी वह अटककर बोला, "ये... यहाँ पड़ा था...।" पर्स अब उसके हाथ में था।

सिगरेट वाले आदमी ने आश्चर्य से उसे देखा। साथ वाले डरावने आदमी ने कहा, "अपना नहीं है भाई, पूछो किसी का होगा तो... नहीं तो लेकर जा... किसी गरीब को दे देना..." कहकर लापरवाही से वे दोनों आगे बढ़ गये।

वह भौंचक खड़ा देखता रहा। जैसे खौफनाक गहवर से मुलायम आदमियत रेंगकर उसके सामने से गुज़र गयी हो।